लोक सभा अध्यक्ष पद पर आसीन होने के बाद

सदन को प्रथम संबोधन

माननीय प्रधानमंत्री जी, मंत्रिपरिषद के सभी सदस्यगण, सभी राजनीतिक दलों के नेतागण, सभी माननीय सदस्यगण, 17वीं लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में मेरे प्रति किए गए आप सभी के समर्थन के लिए मैं हृदय के अंत:करण से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

इस चुनौतीपूर्ण कार्य के लिए मेरे ऊपर विश्वास जताने के लिए मैं सभी दलों के प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

मैं माननीय प्रोटेम स्पीकर डॉ. वीरेन्द्र कुमार जी और उनकी प्रो-टीम श्री सुरेश कोडिकुन्निल जी, श्री भर्तृहरि महताब जी, श्री बृजभूषण शरण सिंह जी और उनकी पूरी टीम को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने दो दिन तक इस सदन की कार्यवाही को बेहतरीन ढंग से चलाया।

मैं देश की जनता का भी आभार व्यक्त करता हूँ। लोकतंत्र के इस महायज्ञ में देश की जनता ने पूरे उल्लास, उमंग और उत्साह के साथ आहुति दी। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति लोगों के बढते विश्वास का प्रतीक है। हमारे सामने बहुत चुनौतियां है और जनता की अपेक्षाएं भी हैं। सदन में सभी माननीय सदस्यों ने अपने-अपने विचार रखे।

मैं भी वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक आपके बीच का एक सदस्य रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि लाखों मतदाताओं के विश्वास, भरोसे के साथ हम इस संसद के मंदिर में आते हैं और संसद के मंदिर में आने के बाद हमारे क्षेत्र की जनता, पूरे देश की जनता का यह विश्वास, भरोसा रहता है कि हम समाज के अंतिम व्यक्ति की बात सदन के माध्यम से करेंगे। जो सभी दलों ने विश्वास व्यक्त किया है कि यह पीठ, यह अध्यक्ष की कुर्सी निष्पक्ष होनी चाहिए और निष्पक्ष दिखनी भी चाहिए।

मेरा प्रयास होगा कि मैं हर माननीय सदस्य, चाहे किसी दल का एक सदस्य हो, चाहे वह सदस्य कितनी बडी संख्या वाले दल का हो, सबको अपनी बात रखने का अवसर दूंगा। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी कहा है कि हम संख्या बल के आधार पर नहीं, हम इस देश के अंदर सबके विश्वास को लेकर चलना चाहते हैं। यह देश वह देश है, जिसका लोकतंत्र सबसे बडा है।

सबसे बडे लोकतंत्र में होने के बाद जिस तरीके से निष्पक्ष रूप से और पारदर्शी तरीके से हमारे यहां इस लोकतंत्र के उत्सव को मनाया जाता है, जिस उमंग और उत्साह के साथ तपती धूप में घंटों इन्तजार करने के बाद लोग मत देकर हम सबको चुनकर भेजते हैं, वे इस विश्वास और भरोसे के साथ भेजते हैं कि हम उनके बुनियादी सवालों को उठाएंगे, उनके अभावों को उठाएंगे।

पिछली बार सरकार ने उनके विश्वास, भरोसे को कायम रखा। इसीलिए, पुन: सरकार को अधिक संख्या बल के आधार पर देश की जनता फिर विश्वास और भरोसे के साथ लाई है।

इसीलिए, अब सरकार की ज्यादा जिम्मेदारी बन जाती है कि जिस तरीके का विश्वास और भरोसा देश की जनता ने सरकार पर व्यक्त किया है, मैं निश्चित रूप से मानता हूँ कि सरकार की जवाबदेही ज्यादा बनती है। मेरी सरकार से यह अपेक्षा रहेगी कि वह अधिक जवाबदेही से, अधिक पारदर्शिता से इस देश के अंदर काम करे, ताकि हम देश में एक मिसाल कायम कर सकें।

मैं माननीय सदस्यों को यह आश्वस्त करना चाहता हूँ कि आप सब लोग जो चुनकर आते हैं, आप सबका यह मंच लोकतंत्र का एक मंदिर है।

आप अपने बुनियादी सवालों को, बुनियादी बातों को, जो जनता आपके बीच कहती है, सदन के माध्यम से देश को अवगत कराना चाहते हैं, अपनी जनता को भी अवगत कराना चाहते हैं। लेकिन, मेरा आपसे आग्रह है कि कई बार मैं सदन में देखता हूँ कि ऐसे बुनियादी सवाल, जो केन्द्र सरकार या सदन के अनुकूल नहीं हैं, उन सवालों को भी संसद में उठाया जाता है।

मैं सभी माननीय सदस्यों से यह कहना चाहूंगा कि लोगों ने हमें संसद सदस्य के रूप में चुनकर भेजा है और संसद सदस्य के रूप में चुनकर भेजने के कारण हमें हमेशा वह सवाल उठाना चाहिए, जो देश की जनता सरकार से पूछना चाहती है।

मेरा सरकार से भी आग्रह रहेगा कि सरकार भी, हर माननीय सदस्य के सवालों का, चाहे वे शून्यकाल में हों, चाहे प्रश्नकाल में हों, जवाबदेही के साथ जवाब देगी और आपकी भावनाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखेगी।

मुझे विश्वास है कि माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में जो भरोसा देश की जनता ने हमें दिया है, आप सब लोग और हम सबके नेता के रूप में माननीय प्रधानमंत्री जी यहां पर हैं, मेरी भी कोशिश होगी कि मैं आप सबका संरक्षण करूं।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने खुद कहा है कि वे सभी जिन्होंने मुझे वोट दिया, और वे भी जिन्होंने नहीं दिया, वे भी हमारे हैं। सबके विचार और सबकी धारा अलग हो सकती है, सबकी नीतियां भी अलग हो सकती हैं, लेकिन हम सब यहां सदन में इसलिए आए हैं कि हमारा देश समृद्धशील बने, आगे बढे।

आज दुनिया के अन्दर भारत आगे बढ रहा है। दुनिया में भारत की एक बडी मिसाल बनी है। इस सदन के माध्यम से हम सबकी यह कोशिश होनी चाहिए कि हम संसदीय मर्यादा में रहें, ताकि जिस तरीके से हमारा लोकतंत्र पूरा विश्व में माना जाता है, उसी तरह हमारी संसदीय परम्परा की भी पूरे विश्व में लोग मिसाल दे सकें। यही मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ।

मुझे आशा है कि सभी माननीय सदस्य, आपने मुझे जो यह जिम्मेदारी दी है, मैं आप सबके द्वारा दी गई जिम्मेदारी का ठीक से निर्वहन कर सकूंगा। निष्पक्ष रूप से तथा निर्बाध रूप से सदन चलाने में आप मेरा सहयोग करेंगे। आप निश्चित मानिए कि आप सदन में संख्या में कितना भी कम होंगे, लेकिन आपकी हर बुनियादी बातों का संरक्षण करने की मेरी जिम्मेदारी है, जिसे मैं निश्चित रूप से निभाने की कोशिश करूंगा।

वन्दे मातरम्।